अध्ययन सामग्री
एम. ए. सेमेस्टर 2
प्रश्नपत्र – CC IX - UNIT-1
डॉ० मालविका तिवारी
सहायक प्राध्यापक
संस्कृत विभाग
एच. डी. जैन कॉलेज
वी. कुं. सिं. वि०, आरा

29.07.20, उत्तररामचरितम्

## भवभूति के 'उत्तररामचरितम्' में करुण रस का निरूपण कीजिए

कलाप्रियता को करुणा में भी एक विशेष प्रकार का रस या आनन्द मिलता रहा है। अनादि काल से लोग दुःख का वर्णन करते तथा सुनते आये हैं। लोगों की मान्यता यहाँ तक है कि दुःख के संवेग के अवसर पर ही सर्वोत्तम कृतियों की रचना होती है। 'रसेषु करुणो रसः' एक प्रसिद्ध आभाणक है जिसके अनुसार रसों में प्रमुख रस करुण है। संस्कृत का आद्य काव्य रामायण भी महर्षि वाल्मीकि के शोकमग्न होने पर ही प्रस्फुटित हुआ था। आलङ्कारिक शिरोमणि आनन्दवर्धन ने रामायण का रस भी करुण ही बताया है। आनन्दवर्धन के अनुसार जहाँ मन आर्द्र होता है वहाँ अधिक माधुर्य होता है। करुण रस की स्थापना वाल्मीकि के समय से ही मानी जाती है जिसकी आनन्दवर्धन ने सिद्धि की। किन्तु महाकवि भवभूति की रससम्बन्धिनी धारणा करुण को एकमात्र मूल रस मानती है, जिससे इतर रसों की उत्पत्ति होती है। उनके विचार से यह रस प्रकृति है, अन्य रस विकृति हैं, विकार हैं। जिस प्रकार जल तो एक है पर विभिन्न दशाओं में वह आवर्त, तरङ्ग, बुद्बुद इत्यादि दशाओं को प्राप्त करने पर भी मात्र जल है, अन्य सब तो क्षणिक हैं और अंततः जल ही होंगे उसी प्रकार करुण रस प्रकृति है, अन्य रस उसी की विकृतियाँ हैं, अंततः करुण में ही उनका पर्यवसान होने वाला है। भवभूति का विचार निम्न उद्धृत पद्य में स्पष्ट है —

एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्
भिन्नः पृथक् पृथगिवाश्रयते विवर्तान् ।
आवर्तबुद्बुदतरङ्गमयान् विकारान्
अम्भो यथा सलिलमेव हि तत्समग्रम् ॥

भवभूति का करुण-रस-प्रधान नाटक 'उत्तररामचरितम्' रामकथा के उत्तरार्द्ध को लेकर रचित है। करुण रस की प्रधानता के कारण इस नाटक का संस्कृत साहित्य में विशेष स्थान है।

'उत्तररामचरितम्' नाटक में राम और सीता की वेदना एवं अन्तर्द्वन्द्व सामाजिकों को करुणा से विभोर करने वाले हैं। इस नाटक में करुण रस की ऐसी धारा प्रवाहित हो रही है जो जड़ को चेतन और चेतन को जड़ बना देने में पूर्ण समर्थ है। इसी सम्बन्ध में करुण रस की पराकाष्ठा को लक्ष्य करके एक विद्वान् समीक्षक कहता है —

जडानामपि चैतन्यं भवभूतेरभूद्गिरा ।
ग्रावाप्यरोदीत् पार्वत्याः हसतः स्मस्तनावपि ॥

सीता को वनवास देनेवाले राम के रुदन को दिखाकर कवि ने सीता के अपमानित तथा दुःखभरे हृदय को शान्त किया है। उन्होंने निष्प्राण पाषाणों तक को रामचन्द्र के विलाप से प्रभावित करके पर्याप्त मात्रा में रुलाया है। ऐसा चमत्कार किसी अन्य कवि ने नहीं किया है।

'उत्तररामचरितम्' के तृतीयांक में छाया सीता की कल्पना की गई है। इसमें कवि अनेक कौशलों से कारुण्य धारा प्रवाहित करता है तथा वियोग सन्ताप से दग्ध पति-पत्नी को रुला-रुलाकर उनके मन के मालिन्य एवं उदासीनता को दूर करने का प्रयास करता है। राम का शोक 'पुटपाक' के सदृश है +

अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः ।
पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः ॥

परिपाण्डुदुर्बल कपोल सुन्दर सीता करुण रस की मूर्ति अथवा देहधारिणी प्रतीत होती है :—

परिपाण्डुदुर्बलकपोलसुन्दरं दधती विलोलकबरीकमाननम् ।
करुणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी विरहव्यथेव वनमेति जानकी।

सीता वियोग तथा करुणा की साक्षात् प्रतिमा बनी हुई है। पंचवटी

के जन-स्थान के दर्शन से राम को अत्यधिक शोक होता है, उन्हें मूर्च्छा आने लगती है। सीता का हृदय भी राम की इस मर्मस्पर्शी वेदनायुक्त दशा को देखकर पिघल जाता है। तमसा सीता की इस दशा का वर्णन करती है —

तटस्थं नैराश्यादपि च कलुषं विप्रियवशा-
द्वियोगे दीर्घेऽस्मिञ्झटिति घटनास्तम्भितमिव ।
प्रसन्नं सौजन्याद्दयितकरुणैर्गाढकरुणं
द्रवीभूतं प्रेम्णा तवहृदयमस्मिन् क्षण इव ॥

इस प्रकार भवभूति ने 'उत्तररामचरितम्' में करुणा से व्याप्त पवित्र प्रेम का मार्मिक वर्णन प्रस्तुत किया है। राम का हृदय शोक से फटा जा रहा है। सीता भी उनके इस दुर्निवार और कठोर दुःख से बहुत दुःखी होती है। राम कहते हैं —

हा हा देवि ! स्फुटति हृदयं ध्वंसते देहबन्धः,
शून्यं मन्ये जगदविरलज्वालमन्तर्ज्वलामि ।
सीदन्नन्धे तमसि विधुरो मज्जतीवान्तरात्मा,
विष्वङ्मोहः स्थगयति कथं मन्दभाग्यः करोमि ॥

अर्थात् हे देवि ! तुम्हारे बिना मेरा हृदय फटा जाता है, शरीर का सन्धिबन्धन शिथिल हो रहा है और मैं संसार को शून्य समझ रहा हूँ। मैं शरीर के भीतर हृदय में अविच्छिन्न ताप से दग्ध हो रहा हूँ। अवसाद युक्त हुआ विकल अन्तःकरण गाढ़े अन्धकार में मानों डूब रहा है। चारों ओर मूर्च्छा मेरा आवरण कर रही है। मैं मन्द भाग्य वाला कहाँ जाऊँ, क्या करूँ ? यह कहकर राम मूर्च्छित हो जाते हैं।

'उत्तररामचरितम्' में प्रारम्भ से अन्त तक सर्वत्र कारुण्य-धारा ही प्रवाहित हो रही है। प्रथम अंक में जनक के चले जाने से राम खिन्न चित्त वाली सीता को सान्त्वना प्रदान करते हैं। चित्र-दर्शन में अतीत स्मरण के रूप में करुणा का परिपाक हुआ है। इसमें प्रगाढ़ अनुराग भविष्य-शोक की गरिमा को असह्य बनाने वाला है। दुर्मुख के लोकापवाद का समाचार सुन राम को सीता से सम्भावित

विरह से विकल बनाने वाला है।

द्वितीय अंक में बारह वर्ष के व्यवधान के बाद भी राम की करुणा में कोई न्यूनता नहीं आई है। राम दण्डकारण्य और पञ्चवटी में प्रवेश करके इन वन्य-प्रदेशों में सीता के साथ अनुभूत अतीत-सौख्यों के स्मरण की व्यथा से भर उठते हैं।

तृतीय अंक में करुणा मूर्तिमती हो जाती है। इस अंक के अधिकांश छन्दों में करुण रस की तीव्र, गम्भीर एवं मर्म-स्पर्शिनी अभिव्यञ्जना हुई है। इस अन्तर्वेदना से जो शोकातिरेक उत्पन्न होता है, वह एकान्त में जी भरकर रोने से हल्का हो सकता है, ठीक उसी प्रकार जैसे बढ़े हुए पानी को निकाल देने से सरोवर का शोधन हो जाता है। अन्तःकरण का सन्ताप शरीर को जलाता है, किन्तु भस्म नहीं करता। इसी प्रकार मर्मस्थल को विदीर्ण करने वाला भाग्य प्रहार करता है, लेकिन जीवन को नष्ट नहीं करता —

दलति हृदयं शोकोद्वेगाद् द्विधा तु न भिद्यते।
वहति विकलः कायो मोहं न मुञ्चति चेतनाम्॥

शोक से विह्वल शरीर मोह धारण करता है, किन्तु चैतन्य को नहीं छोड़ता। एक ओर राम अपनी व्यथा का वर्णन करके करुण रस की धारा प्रवाहित करते हैं तो दूसरी ओर वे सीता को मृत समझकर विलाप करते हैं।

पञ्चम अंक में चन्द्रकेतु तथा लव का परस्पर अज्ञातावस्था में युद्ध भी करुणोत्पादक है।

षष्ठ अंक में राम लव-कुश से मिलकर अपूर्व वात्सल्य का अनुभव करते हैं, साथ ही उनकी आकृति में सीता के सौन्दर्य की झलक पाकर तथा निर्वासन के समय की गर्भिणी सीता की अवस्था का स्मरण करके वे शोकाभिभूत होकर करुणामयी मर्मस्पर्शिनी कारुण्यधारा प्रवाहित करते हैं।

सप्तम अंक में सीता-राम का पुनर्मिलन है, किन्तु इसके मूल में भी सीता-निर्वासन का करुण अभिनय है। यह तो तृतीय अंक का ही नैसर्गिक चरमोत्कर्ष है। इसमें भाव-गाम्भीर्य के साथ करुण रस की सुखद एवं मधुर परिणति है।

भवभूति ने करुण रस की मार्मिक अभिव्यञ्जना के लिए विलाप तथा मूर्च्छना नामक दो उपादान अपनाये हैं। उन्होंने शोक की गम्भीर व्यञ्जना में हृदय की सूक्ष्मातिसूक्ष्म और कोमल अन्तर्दशाओं का मार्मिक चित्रण किया है। दाम्पत्य प्रेम के कोमल चित्र करुण रस की पृष्ठभूमि को प्रस्तुत करते हुए शोक में भी कवि ने आनन्द, उत्पन्न कर दिया है। कवि ने शोक की मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति हेतु छाया-सीता की जो कल्पना की है, उसने संस्कृत साहित्य में करुण रस की अतुलनीय मन्दाकिनी प्रवाहित कर दी है। करुण रस के इस क्षेत्र में महाकवि भवभूति की समानता करने वाला कोई दूसरा कवि नहीं है।